# साई व्हायब्रियॉनिक्स मासिक पत्रिका

www.vibrionics.org

"आप जब भी किसी बिमार, मायूस, बैचेन अथवा अस्वस्थ व्यक्ति से मिलते है, समझो वही तुम्हारा सेवा क्षेत्र है।"..... श्री सत्य साईबाबा

खंड 3 भाग 1 जनवरी 2012

## ॐ डॉ. जे.के. अग्रवाल कि मेज से ॐ

प्रिय चिकित्सक,

कंपनयुक्त उपचार प्रणाली अर्थात व्हायब्रेषनल हिलींग प्रकिया हमारे यहा दो प्रकार से की जा रही है । कुछ पुराने चिकित्सक साईराम हिलींग व्हायब्रेषन पोटेन्टाइजर (**SRHVP**) इस्तमाल करते है तथा अन्य चिकित्सक नए 108 सी. सी. बक्से का उपयोग करते है । व्हायब्रेषनल हिलींग (कंपन युक्त उपचार) की यह नई प्रणाली स्वामी के आर्षिवाद से चार वर्ष पूर्व सृजित की गई । इसका उद्देष्य केवल यह था कि मेडिकल कॅम्पो तथा व्हायब्रियॉनिक्स क्लिनिक में पोटेन्टाइजर के उपयोग मे लगने वाला दीर्घ समय टाला जा सके । हमने अनुरुप बिमारियों तथा लक्षणों के लिए दी जाने वाली रेमेडीज को एकत्रित करते हुए 108 तयार कॉम्बोस् का संच बनाया । इन 108 कॉम्बोस् में सभी प्रकार की मानवी बिमारियों के साथ साथ पेड पौधो एवं जानवरों के उपचार की रेमेडीज् भी शामिल है । आप सोच रहे होंगे कि एकहि कॉम्बो अनेक बिमारियोंपर कैसे असरदार होता है ? उदाहरण के लिए सी.सी. 21.2 सभी प्रकार के स्कीन इन्फेक्षन (मुँहासो से सफेद दाग तक) पर परिणामकारक है । इसकी वजह यह है कि उचित रेमेडि उस बिमारी के साथ प्रतिध्वनित होती है जबकि अन्य रेमेडिज मरीज के शरिर से बिना किसी नुकसान के प्रवाहित होती है । 108 कॉमन कॉम्बोस् यह भगवान बाबा कि हमे दी गई अनुपम भेट है जो न केवल चिकित्सा हेतु बल्कि प्रषिक्षण के लिए भी आसान है । अगर आप पुराने व्हायब्रियॉनिक्स चिकित्सको में से है और 108 सी.सी.बक्सा प्राप्त करना चाहते है तो हमे संपर्क करे । अगर आप 108 सी.सी. बक्सा इस्तमाल कर रहे है और **SRHVP** की आवष्यकता महसूस करते है तो हमे अगले ॲडवान्स कोर्स की जानकारी हेतु लिखे । प्रॅक्टीषनर्स की मदद करने में हमे सदैव प्रसन्नता होती है ।

108 कॉम्बोस् को दिए गए नए शीर्षक संबंधी कुछ संभ्रम व्यक्त किया गया है । नई किताब ( 2011 संस्करण) मे कॉम्बो नंबर वही है जब कि कुछ अन्य बिमारियो के नाम जोडे गए है जिनका इलाज भी उस कॉम्बोव्दारा किया जा सकता है । कुछ कॉम्बोस् के शीर्षक बदले गए है ताकि शीर्षक समावेषक हो । संभ्रम होने पर कृपया इन्डेक्स देखे ताकि यह सुनिष्चित हो कि आप सही कॉम्बो दे रहे है ।

क्रिस्मस् तथा नव वर्ष के दौरान भारी संख्या मे प्रॅक्टीषनरो व्दारा हमसे नए 108 बक्सों की मांग की गई । मै आपको पुन: सूचित करना चाहता हूँ कि नया बक्सा लेने कि कोई आवष्यकता नही है । हमने मास्टर बॉक्स को बाबा कि महासमाधी के पास स्वामी के आर्षिवाद के लिए रखा था । आप अपना बक्सा प्रषांति निलयम लेकर आइए तथा इस मास्टर बॉक्स से रिचार्ज करवा लिजिए । जब आप हमसे अपना बक्सा रिचार्ज करवाएंगे उसी समय नई किताब (2011 संस्करण) हमसे प्राप्त कर सकते है ।

नए वर्ष में पदार्पण के साथ हम प्रषांति निलयम मे अद्भूत कंपनो को महसूस कर रहे है तथा स्वामी की सूक्ष्म उपस्थिती, उनकी प्रेम ऊर्जा का अनुभव कर रहे है ।

साई की प्रेममय सेवा में

जीत अग्रवाल

**********

## ॐ कॉम्बोस् व्दारा सफल उपचार के उदाहरण ( केस हिस्टरीज )ॐ

### 1. विस्मरण, थकान, घुटनों मे दर्द 01423जे..... भारत

46 वर्षिय महिला, विस्मरण, थकान तथा घुटनों मे दर्द की बिमारीसे पीडित थी । उन्हे.....सी.सी. 12.1 वयस्क टॅानिक .. .... दिन मे 3 बार, दिया गया ।

एक माह कि अवधी मे वह महिला सारा दिन बिना थकान के कार्य करने लगी । घुटनों का दर्द दूर हो गया तथा उसकी स्मरण शक्ति मे अद्भूत सुधार हुआ । अगले 15 दिनों तक उन्हे उपरोक्त डोसेज दिन मे दो बार दिए गए और अब वे दिन मे एक बार ले रही है ।

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

### 2. हृदय रोग (इस्कीमिक हार्ट डिसीज) 00600जे ..... भारत

61 वर्षिय पुरुष सन 2001 से हृदय रोग से पिडीत थे । उन्हे सन 2006 मे तथा सन 2009 मे लकवे के झटके पडे थे । हालहि मे वे चक्कर/घुमेरी, बेहोषी तथा मस्तिष्क मे शून्यता का अनुभव कर रहे थे । प्रॅक्टीषनर से मिलने के दो दिन पूर्व से उनकी परेषानी और बढ गई थी । कुछ ही समय पहले उनका एम.आर.आई स्कॅन, हृदय तथा मस्तिष्क चिकित्सक व्दारा करवाया गया । रिपोर्ट अभी नही आयी थी । इस बीच उन्हे.....

सी.सी. 3.5 + सी.सी. 15.1 + सी.सी.18.7 .....दिन मे 6 बार दिया गया । (आर्टेरिओस्लेरॉसिस) + (भावुकता टॅानिक) +(चक्कर/घुमेरी)

कुछ दिनों पष्चात प्राप्त हुए एम.आर.आई. रिपोर्ट मे लकवे के कारण (2006 तथा 2009 मे पडे दौरे) मस्तिष्क की बायी कॅरोटिड आर्टरी मे 77% संकीर्णता तथा दाहिनी ओर 48% संकीर्णता पायी गई । उन्हे शीघ्रातिषीघ्र शल्यक्रिया कि सलाह दी गयी । मरीज की स्वामी पर दृढ श्रध्दा थी और वे नियमित रुप से उपरोक्त कॉम्बो लेकर और बेहतर महसूस कर रहे थे । उनके परिवारजन किसी भी प्रकार की जोखिम नही उठाना चाहते थे । बम्बई जा कर शल्य क्रिया कराने की तयारी की गई । उसी रात स्वामी मरीज के स्वप्न मे आए तथा उन्हे कहा कि "चिंता न करो, षल्यक्रिया कि कोई आवष्यकता नही है ।" मरीज ने स्वामी के प्रति संपूर्ण निष्ठा रखते हुए शल्यक्रिया न कराने का फैसला किया । प्रॅक्टीषनर ने दिए हुए कॉम्बो को ही वे लेते रहे । छः माह बाद स्वामी की कृपा से हृदय रोग के सभी लक्षण अदृष्य हो गए ।

वे प्रॅक्टीषनर्स जो साईराम पोटेन्टाइजर उपयोग मे लाते है, उनके लिए – बी.आर.5 हार्ट + बी.आर.18 रक्तसंचार + एस.एम.4 स्थायित्व + एस.एम.5 शांति तथा प्रेम + एस.एम.15 रक्तसंचार + एस.आर. 265 ॲकोनाइट (200 सी) + एस.आर. 271 अर्निका (30 सी) + एस.आर. 273 ऑरम मेट + एस.आर. 383 क्युप्रम मेट (30 सी ) + एस.आर. 413 सम्बल (200 सी ) + एस.आर. 415 टेरेबिन (200 सी) + एस.आर. 495 हृदय + एस.आर. 546 बॅरिटा कार्ब ।

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

### 3. कर्ण बधिरता (बहिरापन) तथा लकवा । 01423 जे ..... भारत

76 वर्षिय महिला को एक वर्ष पूर्व मस्तिष्कमे लकवे का झटका पडा था । परिणाम स्वरूप उनके दाहिने कान मे बहिरापन आया तथा बाए कान मे लगातार भनभनाहट सुनायी देने लगी । इएनटी विषेषज्ञ ने इसकी वजह असंतुलन बतायी तथा किसी इलाज की संभावना से इन्कार किया । प्रॅक्टीषनर ने उन्हे.....

सी.सी.5.2 (बहिरापन) + सी.सी.5.3 (मेनिअर्स डिसीज) + सी.सी.18.4 (लकवा) दिन मे 3 बार दिया ।

दो सप्ताह तक कॉम्बो लेने के बाद महिला को दाहिने कान मे हलका हलका सुनायी देने लगा । दो माह बाद महिला को उसी कान से पूर्ववत सुनायी देने लगा । बाए कान की भनभनाहट भी बंद हो गई । वह महिला उसी कॉम्बोको अब दिन मे दो बार ले रही है ।

वे प्रॅक्टीषनर्स जो साईराम पोटेन्टाइजर उपयोग मे लाते है, उनके लिए – एन.एम. 51 कान मे दर्द + एन.एम. 77 कान की षिरा + ओ.एम. 10 कान + बी.आर. 19 कान + एस.एम. 19 कान + एस.आर. 375 सिनिन सल्फ (30 सी) + एस.आर. 380 कोलचिकम + एस.आर.415 टेरेबिन (30 सी) + एस.आर. 471 सी.एन.8 ऑडिटरी + एस.आर.490 यूस्टषिअन टयूब । .

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

## 4. डायबिटीस मेलाइटिस टाइप 2 2786...... रषिया

58 वर्षिय महिला को गत नउ वर्षो से डायबिटीस टाइप 2 से पिडीत थी । भावुक स्थूलता, खराब स्वास्थ्य तथा तनाव के कारण वे षक्तिहीन हो गई थी । उनका इलाज डायबिटीस के लिए ‘ब्येटा’ तथा ‘ग्लुकोवान्स’ नामक ॲलोपॅथिक दवाइयों से चल रहा था । खून मे षक्कर की मा़त्रा 10 युनिट थी जबकी सामान्यतः वह 5.5 युनिट होनी चाहिए । उन्हे ......

1) सी.सी. 12.1 (वयस्क टॉनिक) + सी.सी. 15.4 (खानपान विकार) + सी.सी. 18.1 ( मस्तिष्क असामर्थ्य) ......दिन मे 3 बार तथा

2) सी.सी. 6.3 (डायबिटीस).......... दिन मे 2 बार दिए गए ।

दो सप्ताह मे उसका स्वास्थ्य बेहतर होकर वे स्फूर्ती महसूस करने लगी । खून मे षक्कर की बढी मात्रा थोडी कम हुयी । दस दिनो बाद यह मात्रा 9 युनिट तक घटी ।

उन्हे 2) के स्थान पर साईराम पोटेन्टाइजर व्दारा बनायी गई निम्न कॉम्बो दी गई ।

3) एस.एम. 17 (डायबिटीस) + एस.एम. 4 (स्थायित्व)+ एस.एम.31 (तनाव) पहले सप्ताह मे दिन मे एक बार, उसके बाद दिन मे 3 बार ।

एक सप्ताह और बितने पर, खून मे षक्कर की मात्रा सामान्य अर्थात 5.5 युनिट हो गई अत: मरीज की ॲलोपॅथिक दवा का डोस् घटाया गया । आगे और जानकारी प्राप्त नही की जा सकी क्योंकि मरीज आपने देष लौट गयी परंतु प्रॅक्टीषनर को विष्वास है कि यह मरीज डायबिटीस् से ठीक होकर उन्हे नई जिदंगी मिल गई होगी ।

वे प्रॅक्टीषनर्स जो साइराम पोटेन्टाइजर उपयोग मे लाते है उनके लिए – टॉनिक के रूपमे : एन.एम. 63 बॅक अप + एन.एम. 75 डेबिलिटी ।
खानपान विकार : बी. आर.9 पचन + एस.आर.280 कॅल्क कार्ब (30 सी) + एस.आर.319 थायरॉइड ग्लॅन्ड + एस.आर. 341 अल्फाल्फा + एस.आर.498 हाइपोथॅलामस + एस.आर.530 पेट + एस.आर.572 स्थूलत्व ;
तनाव के लिए : एन.एम. 8 कामिंग + एन.एम 37 ॲसिडीटी + बी.आर. 2 खून मे षक्कर + बी.आर. 4 भय + बी आर 6 उन्माद + बी.आर.7 तनाव + एस.एम.1 अस्तित्व षुध्दि + एस.एम.2 दैवि रक्षण + एस.एम.4 स्थायित्व + एस.एम.5 षांति तथा प्रेम समन्वयन + एस.एम.6 तनाव + एस.एम.39 दबाव ;
डायबिटीस के लिए : एन.एम. 21 के.बी.एस. + एन.एम. 74 डायबिटीस + ओ.एम.8 हाइपो तथा हाइपरग्लाइसेमिया + ओ.एम.1 पचन मनोषारिरीक + बी.आर.2 खून मे षक्कर + एस.एम.41 उत्थान + एस.आर. 302 नक्स वोम + एस.आर. 305 पॅन्क्रीयाटीन + एस.आर. 319 थाइरॉइड ग्लेन्ड + एस.आर. 320 थाइरॉइडिनम + एस. आर. 499 इन्सूलिन + एस. आर. 568 हाइपोथाइरॉइडिझम् ।

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

## 5. मोतियॉ बिन्द 2095.... अमेरिका

डयूक नामक 12 वर्षिय कुत्ता मोतियॉ बिन्द से पिडीत था । उस कुत्ते को एन.एम. 47 मोतियॉ बिन्द मिश्रण + एन.एम.48 विटॅमिन आई कम्पाउन्उ + एन.एम.68 मोतियॉ बिन्द मिश्रण बी ....... दिन मे दो बार दिया गया ।

व्हायब्रो कॉम्बो डयूक को दिया जा रहा है इस बात से उनके पषू चिकित्सक अनभिज्ञ थे । अगली जॉच के दौरान पषू चिकित्सक हैरानी मे पड गए तथा बार बार डयूक की ऑखो की जॉच एवं उनकी लिखी टिप्पणी को निहारने लगे । मोतियॉ बिन्द समान्यतः यथा समय बिगडती जाने वाली बिमारी है परंतु डयूक की दष्टी बेहतर होती जा रही थी तथा मोतियॉ बिन्द गलने लगी थी ।

नोट : उपरोक्त कॉम्बो का समानांतर पर्यायी कॉम्बो सी.सी. 7.2 पार्षलविझन है ।

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

## श्रध्दा, निष्ठा, अनुषासन तथा सबूरी

यह लेख हालहि मे एक प्रॅक्टीषनर व्दारा उनके एक मरीज के लिए लिखा था जो बार बार कॉम्बो लेना भूल रहे थे और संभ्रम मे थे ।

इस कलियुग मे उन्नत आत्माओं को छोडकर अन्य सभी के लिए श्रध्दा, निष्ठा, अनुषासन तथा सबूरी बनाए रखना बडा मुष्किल है । हमारा अहंकारी मन हम पर प्रभाव डाल कर हमे षंका, चिंता, भय, दुःख क्रोध जैसी नकारात्मक भावनाओसे लिप्त कर देता है । हमारा मन भूत और भविष्य के चंगुल मे फंस जाता है । यह सब हमे वर्तमान से दूर ले जाता है ।

आपका षंका ग्रस्त मन षायद आपसे कह रहा है कि इन छोटी छोटी सफेद, षक्कर की गोलीयॉ खाने से क्या होने वाला है ? स्वंय अपने आप मे ये गोलीयॉ कुछ नही करती । मानव देह धारण किए हुए भगवान श्री सत्य साईबाबा के निर्देषन मे बनी इन गोलीयों मे बाबाने रोग निवारक कंपन रुपी ऊर्जा भर दी है । फिर स्वयं अपने हाथों से इनमे रोग निवारक षक्ती संचारित की है । उस मरीज की जरुरत नुसार यह षक्ती इलाज करती है, हमारी ओर से बाबा पर (अथवा जो भी नाम और रुप आपको पसंद हो) विष्वास रखना होगा । श्रध्दा रखनी होगी की ईष्वर कभी कोई गलती नही करते । जो भी होता है उसीमे हमारी भलाई है । हमे सबूरी रखकर उसकी ईच्छा का स्वीकार यह सोचकर करना है कि ईष्वर सदैव, सर्वत्र हमारा रक्षण, पालन, पोषण कर रहा है ।

एक पुरानी कहावत है तद्नुसार, भगवान पंछियों का ख्याल तो रखता है परंतु अपना दाना उन्हे ही ढुंढना है । ज्ञानार्जन, धनार्जन, परिवार पोषण, आध्यात्मिक विकास अथवा षरीर स्वास्थ्य हेतु कार्य करना होगा । इसके लिए अनुषासन तथा सबूरी की आवष्यकता होती है ।

हम जब आपनी श्रध्दा और निष्ठा को अनुषासन प्रदान करते हुए व्हायब्रो रेमेडी ग्रहण करते है तथा सबूरी का परिचय देते है, विष्वास रखिए अद्भुत विष्व के व्दार खुलेंगे । मैने कई बार यह सब होते हुए देखा है । लोग ठीक हुए है, अच्छी अच्छी घटनाए उनके जीवन मे घटने लगी है क्यूँकि उन्होंने श्रध्दा के साथ, सबूरी रखते हुए अनुषासनबध्दता का परिचय दिया । इसमे लगने वाली अवधि व्यक्ती–व्यक्ती पर निर्भर है । अतः अपने मन को षांत करो तथा उन छोटी–छोटी सफेद गोलीयों प्रति विष्वास, निष्ठा, अनुषासन तथा सबूरी के साथ स्वयंको आष्वस्त करो । ईष्वर को तुम्हारे लिए उसकी षक्ती, तथा प्रेम उसके निर्धारित किए समय तथा मार्ग से अभिव्यक्त करने दो । साई राम ।

***********************************************************************************************

## स्वास्थ्य परामर्ष

## बुखार का स्वागत करो, उससे डरो नही।

स्वास्थ्य रक्षा मे बुखार की भूमिका संबंधी इन दिनों गलत धारणा देखी जाती है । अधिकतर पालक गलतफैमी की वजह से बुखार से डरते है जबकी उन्हे बुखार का सम्मान करना चाहिए, उससे प्यार करना चाहिए । बुखार यह

षरीर की अनन्य साधारण तथा जटिल रोग निवारण प्रकिया है । अनेक वाद्यों के सुरीले संगम मे छिडने वाली मधुर तान की तरह केवल प्रति रक्षा उत्तेजित कर संक्रमण नष्ट करने एवं स्वास्थ्य पूर्ववत् कराने ही बुखार का आगमन होता है । अमरीकी बाल रोग अकादमी के वर्ष 2011 का अभ्यास इस नतीजे पर पहुँचा है की पालको ने बुखार को अच्छी तर समझ लेना चाहिए । बुखार स्वास्थ्य को खतरे मे डालने वाला नाही बल्की स्वास्थ्य रक्षक है । बुखार की स्थिती मे इलाज का प्राथमिक उद्येष्य केवल ताप कम करने की बजाए रोगी को आराम पहुँचाना होना चाहिए ।

हमारी परम्पराओं मे बुखार की पहचान कर उसका सम्मान किया जाता रहा है । लोग जानते थे की बुखार उनमे प्रतीकार षक्ती निर्माण करके निकल जाएगा एक लहर की तरह जो किनारे पहुँचकर षांत हो जाती है । आज बुंखार को बिना पहचाने या इस प्रक्रिया को जाने बगैर बहोत लोग तुरंत ही ॲन्टीपायरेटीक अथवा बुखार षांत करने वाली औषधी का (जैसे ॲसिटॅमिनोफेन, ॲस्पिरीन, इबुप्रुफेन) इस्तमाल करते है । इन औषधीयों से बुखार तो तुरंत उतर जाएगा परंतु शारिरीक प्रकिया खंडित होकर प्रतीकार षक्ती की वृध्दि मे बाधा आएगी तथा संक्रमण नष्ट न होकर लंबी बिमारी की संभावना बढ जाएगी ।

बुखार उतारने वाली दवा का अक्सर दुरुपयोग, अनुचित प्रयोग तथा मात्रा आवष्यकता से अधिक दी जाती है । 50% पालक 100.4 फॅ. से कम तापमान को बुखार मानते है तथा 25% चिकित्सक भी इस दषा के पहले ही ॲन्टी पायरेटीक खिला देते है । हैरानी की बात तो यह है कि 85% पालक सोते हुए बच्चे को जगाकर ॲन्टीपायरेटिक खिलाते है । 80% बालरोग विषेषज्ञ इस व्यवहार से असहमत है । निद्रावस्था मे होनेवाले रोग निवारण का लाभ केवल बुखार उतारने की अपेक्षा कई गुना ज्यादा है ।

आधुनिक दवाईयॉ हमे हमारे षरीर से दूर ले गई है । लक्षणों का इलाज यही उनका लक्ष्य होने से मरीज अविलंब फायदों की उम्मीद करना सीख गए है । इस बात का सत्य उस वक्त उभर कर आता है जब प्यारे पालक अपने बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हो जाते है । रोग का इलाज बिना किए केवल उसके लक्षणोंका इलाज करने का अर्थ है खतरे की घंटी से बॅटरी निकाल लेना ताकि अवाज बंद हो जाए भले हि घर जलकर राख हो जाए । पालको तथा बच्चो को षिक्षित करना आवष्यक है ताकि वे षरीर के संकेतो को जाने एवं पहचाने, केवल उन संकेतो/लक्षणों को दूर करने के पिछे न लगे रहे ।

100.4 फॅ. से अधिक मौखिक तापमान बुखार कहलाता है । सामान्यत वह स्वयं नियंत्रित तथा अल्पावधी का होता है । बुखार की वजह से बीमारी के बढने अथवा लंबी अवधी के न्यूरॉलॉजिकल दुष्परिणामों के कोई प्रमाण सामने नही आए है । यह समझना आवष्यक है कि बुखार कोई रोग नाही है केवल आंतरिक विसंगति का लक्षण है ।

मानव सदैव जिवित रहने हेतु प्रयत्नरत होता है । सभी स्तर पर (जैसे मानसिक, भौतिक, षारिरीक, जैविक) यह सत्य है । जीवन प्रवर्तन हेतु हम कार्यरत रहते है । यह बात समझमे आ जाए तब यह जानना आसान हो जाएगा कि बुखार एक संक्रमण का मुकाबला करने की षारिरीक प्रकिया है जो जीवन के लिए सहायक है ।

जब षरीर मे आक्रमण होता है (वाइरस, बॅक्टेरिया इ. व्दारा) दिमाग को संकेत मिलता है कि तापमान बढाकर संक्रमक को नष्ट करो । दिमाग व्दारा हाइपोथॅलमिक सेट पॉइन्ट बढाया जाता है तथा कुछ दिनों तक तापमान बढाए रखा जाता है ताकि संक्रमक को मारा जाए । यह संकेत जीवाणू द्रव्य (टॉक्सीन), साइटोकीन, मॅक्रोफॅजेस अथवा जीवाणुनाषक तत्व के निर्माण व्दारा दिए जाते है । बढा हुआ तापमान प्रतिरक्षा प्रणाली मे सहायक होता है । संक्रमण को फैलन से रोकने मे तथा संक्रमित अवयव के रक्षण हेतू षारिरीक सूजन हितकारक होती है । इससे रोग निवारण प्रकिया संचालित होती है ।

जब भी बुखार $102^0$ फॅ. से अधिक हो अथवा तीन दिन से ज्यादा रहे, चिकित्सक से परामर्ष ले । ठंडे पानी की पट्टीया अथवा बरफ पट्टी अत्यंत उपयोगी है । अगर बुखार के कारण बेचैनी हो, सॉस लेने मे कठिनाई हो, गर्दन मे कडापन आ जाए, मिर्गी अथवा संभ्रम वाली स्थिती मे भी चिकित्सक से परामर्ष ले । उचित षारिरीक जलनियोजन तथा नमक की पुन: पूर्ती षरीर के लिए सहायक होती है ।

(....एल किमिलेस्की नॅचरल न्यूज.कॉम के लिए)

( बुखार के लिए योग्य रेमेडी हेतू अपनी रेमेडी बुक देखे )

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

## श्रवण षक्ती की क्षति

अपने मि़त्रो तथा परिवार जनो के साथ वार्तालाप का आनंद लेने हेतु आवष्यक श्रवण षक्ति का अभाव निराषाजनक सिध्द होता है । श्रवणदोष के कारण सुनायी देना कष्टप्रद हो जाता है । इस दोष का निवारण सामान्यतः संभव है । बधिरता व्यक्ति को किसी भी ध्वनि को सुनने से पूर्णतः वंचित कर सकती है ।

श्रवण हीनता के निम्न कारण हो सकते हे ।

- अनुवांषिकता ।
- कर्ण संक्रमण अथवा बीमारी ( जैसे मेनिंनजायटीस ) ।
- आघात ।
- कुछ औषधियों के सेवन से ।
- लंबी अवधी तक तेज ध्वनि के सुनने से ।
- वृध्दावस्था ।

श्रवणहीनता दो प्रकार की हो सकती है ।

1) आंतरिक कर्ण अथवा श्रवण संबंधित तां़त्रिका के क्षतिग्रस्त होने पर अथवा

2) ध्वनिलहरों के आंतरिक कर्ण तक न पहुॅंचपाने से ।

पहले प्रकार की श्रवणहीनता स्थायी स्वरुपकी होती है । दुसरे प्रकार की श्रवणहीनता कानके पडदे पर मोम या तरल द्रव्य के जमाव से अथवा कानका पडदा फटने से हो सकती है । इलाज न करने पर श्रवण दोष बढ सकता है । अगर आप को सुनने मे कठिनाई हो तब आपको मदद मिल सकती है । संभव इलाजो मे कर्ण यंत्र, कर्णावर्त रोपण (कोक्लीआ इम्प्लान्ट), विषेष प्रषिक्षण, औषधी तथा षल्यक्रिया सामिल है ।

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

## पौरुष ग्रन्थि रोग (प्रोस्टेट डिसीज)

पौरुष ग्रन्थि वीर्य बनाने मे सहायक होती है । षरीर मे मूत्र विसर्जन करनेवाली नलिका के आसपास पौरुष ग्रन्थि घिरी होती है । युवावस्था में अखरोट के आकार की यह ग्रन्थि उम्र के साथ बढती जाती है । प्रमाण से अधिक बढ जाने पर समस्या निर्माण हो सकती है । 50 वर्ष की आयु के बाद पुरुषों मे यह एक आम समस्या है । वृध्दावस्था के साथ तकलीफ बढ सकती है ।

सामान्य लक्षण :–

1 प्रोस्टाइटीस – जीवाणू व्दारा संक्रमण

2 **B P H – Benign Prostatic Hyperplacia** – पौरुष ग्रन्थि मे सूजन के कारण बार बार मूत्र विसर्जन विषेषकर रात्री मे अथवा मूत्र विसर्जनोपरांत टपकना ।

3 पौरुष ग्रन्थिका कर्क रोग – यह आम कर्क रोगें में एक है जिसे प्रारंभिक अवस्था मे उपचार व्दारा नियंत्रित किया जा सकता है ।

– राष्ट्रीय मधुमेह एवं किडनी संस्था

(कृप्या कॉमन कॉम्बो बुक कॅटॅगरी 14–पुरुष अवयव अथवा व्हाइब्रियॅानिक्स 2004 पुस्तक – **SRHVP 3.14** का अवलोकन करे ।)

*****************************************************************************************

## ॐ प्रश्नोत्तर ॐ

प्रः— वात से पिडीत मरीज को क्या सी.सी. 20.3 के अलावा कोई और कॉम्बो दिया जा सकता है ?

उ.:— वात से पिडीत मरीज को जोडो मे अधिक दर्द होने पर उपचार की षुरुआत सी.सी. 20.1 अथवा सी.सी. 20.2 से करना बेहतर होगा । जब इन कॉम्बोस से राहत न मिले, केवल उसी स्थितीमे सी.सी. 20.3 दिजिए । यह भी काम न करे तब सी.सी. 20.4 उसमे मिला दिजिए जिससे मांस पेषीयों से संबंधित तकलीफ भी दूर हो जाएगी क्योंकि वात के कारण मांस पेषीयों पर असर हो सकता है ।

प्र :— खून की कमी होने पर कौनसा कॉम्बो दिया जाए ? यह बहोतसी महिलाओं की समस्या है ?

उ :— ॲनेमिया अर्थात खूनकी कमी के लिए सी.सी. 3.1 हार्ट टॉनिक दिया जा सकता है । परंतु कारणों का पता लगाना चाहिए जैसे अधिक मासिकस्त्राव की स्थिती मे सी.सी. 8.7 मेन्सेस् हेवी दिया जाना चाहिए और अगर लौह की कमी हो, तो सी.सी. 4.12 लीव्हर टॉनिक को सी. सी. 3.1 के साथ मिलाकर देना चाहिए ।

प्र : —लंबी बिमारी के दौरान अगर मरीजको फ्लू हो जाए तो क्या लंबी बिमारी का इलाज रोक कर फ्लू का इलाज किया जाए ?

उ : — इसके लिए कोई निष्चित नियम नही है । प्रक्टीषनर अपने ज्ञान के आधार पर निर्णय कर सकते है । उदाहरण के लिए अगर किसी मरीज का कर्क रोग के लिए इलाज चल रहा हो और उसे सर्दी हो जाए तब कॅन्सर का इलाज बिना रोके सर्दी की रेमेडी दी जा सकती है । आरथ्राइटीस (वात) के मरीज को भी अगर इलाज के दौरान फ्लू हो जाए तो साथ साथ सी.सी. 9.2 दिया जा सकता है । फिर भी कोई अगर आरथ्राइटीस की रेमेडी चंद दिनों के लिए रोक दे तब भी खास नुकसान नही होगा ।

प्र :— क्या मै नारायणी ग्रुप की रेमेडी एकत्रित कर सकता हूँ ? कंपनो को एकत्रित करने के लिए क्या कोई मापदंड है ?

उ :— आप किसी भी रेमेडी अथवा मिश्रण को दूसरी रेमेडी या कॉम्बो में मिला सकते हो । कंपनो को एकत्रित करने का केवल एकहि मापदंड है, मरीज का षीघ्रातिषीघ्र स्वस्थ होना । आप एक रेमेडी अथवा मिश्रण को दूसरे कॉम्बोके साथ मिलाने की वजह होती है सभी बिमारीया अथवा लक्षणों का समावेष रेमेडी मे हो जाए । उदाहरण के लिए सर्दी के साथ बुंखार, सिर भारी, बंद नाक, गलेमे खराष, खॉसी या गॅस्ट्रीक प्रॉब्लम हो सकती है । ऐसे मे एन.एम. 11 कोड + एन.एम.18 जनरल फिवर + एस.एम.35 साइनस + एस.एम.40 थ्रोट + एन.एम. 8 चेस्ट + एन.एम.80 गॅस्ट्रो का कॉम्बो बनाया जा सकता है तीव्र लक्षणों के लिए उपरोक्त कॉम्बो 1 — 2 दिनो तक दिन मे छः बार दे, बाद मे डोसेज कम करते हुए दिन मे 3 बार दे ।

प्रॅक्टीषनर्स, आपको डॉ अग्रवाल के लिए कोई प्रष्न हो तो news@vibrionics.org को लिख भेजे ।

**********

## ॐ भव रोग निवारक के दिव्य वचन ॐ

आज मानव के दुःख और कष्ट के प्रभाव मे होने की वजह केवल उसका मन है । सुःख—दुःख, स्नेह—घृणा तथा इन्द्रीयजनित आनंद का अनुभव मनोनिर्मित है । मन व्दैत भाव से भरा होने से आप यह सब भोग रहे है । मन को संपूर्ण सृष्टि मे एकात्म भाव रखने की आदत डालने पर समस्त विकार दूर हो जाएंगे । जीवन मे सदा मुस्कुराते रहो । व्दैत से भरी इस दुनिया मे लाभ—हानि का बारि—बारि से आना स्वाभाविक है । आप इसे टाल नही सकते विपरित परिस्थिती मे मायूस अथवा अनुकुलता मे अति—उत्साहित न होना । षाष्वत आनंद तक पहुँचाने वाली सीढी की पहली पादान 'संकट' होते है ।

–सत्यसाई बाबा –आजका सुविचार – प्रषांतिनिलयम्

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

लोग आपकी सेवा के योग्य है या नही इसका फैसला स्वयं न करो । केवल इतना जानने की कोषिष करो कि क्या वे दु:खी है ? वे दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते है इसकी जॉच–पडताल न करो, प्रेमभाव के कारण उनमे परिवर्तन संभव है । आपके लिए सेवा एक व्रत है, साधना है, आध्यात्मिक मार्ग है सेवा । सेवा ही आपका प्राण है । सांसों के रुकने पर ही सेवा का अंत हो सकता है ।

–सत्य साईबाबा, दिव्य संदेष, 19 फरवरी 1970

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

जमीन का गीलापन बारिष की पहचान है । ठीक उसी तरह अचल भक्ति की पहचान है मन:षांती । मन की ऐसी षांती जो साधक का पराजय के हमले से रक्षण करती है । ऐसी षांती जो हानि अथवा अपमान में उसे विचलित नही करती ।

–सत्यसाईबाबा – सत्यसाई वचनामृत खंड 5, पृत्र 308

*****************************************************************************************

## सुचना

### अगला वर्कषॉप –

- पोलॅंड – 24 – 25 मार्च रोक्लॉ मे – संपर्क डेरीच हेबिच 0713495010 ई–मेल hebisz@hdp.com.pl
- भारत – 17 – 18 मार्च नागपूर मे – संपर्क राजन जोषी 9422548910 ई–मेल sandiprajan@rediffmail.com

* जय साई राम *

*साई व्हायब्रियॉनिक्स* .......मरीजोके ग्रहण योग्य, निरूषुल्क वैद्यकिय सेवा में उत्कृष्ठता की ओर।